# राणा बनर्जी: नया नहीं इस जीवन में मरना

Pramod Ranjan

**▶ To cite this version:**

Pramod Ranjan. राणा बनर्जी: नया नहीं इस जीवन में मरना. फिरे एशो राणा दा (कवि जननायक ⊠ सामाजिक-राजनीतिक कार्यकर्ता राणा बनर्जी की स्मृति में), अभियान संस्कृति मंच, pp.17-18, 2022, ⟨10.17613/w0z2-kb50⟩. ⟨hal-04487040⟩

**HAL Id: hal-04487040**

**https://hal.science/hal-04487040**

Submitted on 3 Mar 2024

**HAL** is a multi-disciplinary open access archive for the deposit and dissemination of scientific research documents, whether they are published or not. The documents may come from teaching and research institutions in France or abroad, or from public or private research centers.

L'archive ouverte pluridisciplinaire **HAL**, est destinée au dépôt et à la diffusion de documents scientifiques de niveau recherche, publiés ou non, émanant des établissements d'enseignement et de recherche français ou étrangers, des laboratoires publics ou privés.

Distributed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

# फिरे एशो राणा दा...

कवि, जनगायक व सामाजिक-राजनीतिक कार्यकर्त्ता

राणा बनर्जी की स्मृति में

# फिरे एशो राणा दा....

प्रकाशक - अभियान सांस्कृतिक मंच
पटना

संस्करण - 2022

सहयोग राशि - 120/-

फोटो कम्पोजिंग - Raj Computers
पटना-800004

कम्पोजर - अजय कुमार (टुटु)

मुद्रक - अक्षर प्रिंटर्स प्रेस
दरियापुर गोला
पटना-800004

# नया नहीं इस जीवन में मरना

❑ **प्रमोद रंजन**

इस जीवन में मरना तो कुछ कठिन कहीं/किंतु बनाना इस जीवन को इससे कठिन नहीं ।' आप उस समय विचलित हुए बिना नहीं रह पाते जब, यह जानते हैं कि पूरी चेतनता में इस दर्शन को गढ़ने वाले महान कवि मायाकोव्स्की के जीवन का अंत भी आत्महत्या द्वारा हुआ ।

सामाजिक कार्यकर्त्ता राणा बनर्जी की आत्महत्या के संदर्भ में यह प्रसिद्ध वाकया याद रखा जाना चाहिए, कोई सोच सकता है कि यह अपवाद, आत्महत्या के निषेध को गलत साबित करता है और उसे पहेली बना देता है, लेकिन वास्तव में ऐसा है नहीं । यह वाकया जीवन के संदर्भ में अति-आदर्शीकृत दर्शनों का निषेध भर करता है ।

राणा को पहली बार मैंने पटना में भगत सिंह की जन्मशती पर कम्युनिस्ट साथियों द्वारा आयोजित गोष्ठी में देखा-सुना था । विषय था 'भगत सिंह का दलित चिंतन', जिस पर एक वक्ता ने भावविह्वल-हंगामेदार शैली में अपनी बात रखी और भगत सिंह को दलित विमर्श के पक्ष में लगभग 'हाईजैक' कर लिया । श्रोताओं की ओर से कुछ सवाल उठे तो वक्ता ने कहा कि साम्राज्यवाद-भूमंडलीकरण जैसी बातों से हम शूद्रों का क्या वास्ता? वह तुम्हारी चिंता है तुम जानो; हमारी प्राथमिक लड़ाई तो इस बात की है कि तुम हमें छुओ ! हमें मनुष्य होने का हक दो । उनकी यह बात खरी थी, लेकिन कम्युनिस्ट पार्टियों की 'जाति निरपेक्ष' भठ्ठियों (दफ्तरों) में पके श्रोताओं की फुसफुसाहटें, फब्तियां जारी रहीं । गोष्ठी की अध्यक्षता राणा बनर्जी कर रहे थे । राणा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में वक्ता का भावोन्मत्त समर्थन किया । उन्होंने इस आशय की बातें कहीं कि भगत सिंह संबंधी वाम चिंतन में नया अध्याय जुड़ गया है और आयोजकों को चाहिए कि वक्ता द्वारा पढ़े गए पर्चे को पुस्तिका के रूप में छपवा कर वितरित करें ।

गोष्ठी का माहौल अतिरंजनापूर्ण था, लेकिन वहां कुछ नामालूम-से लगने वाले सूत्र मौजूद थे, जो यह बताते हैं कि जड़ता के वे कौन से दबाव हैं जो राणा जैसे स्वतंत्रचेता प्रतिभाशाली के सामने मृत्यु को एक विकल्प के रूप में प्रस्तुत कर डालते हैं । राणा जन्मना ब्राह्मण तो थे ही, शायद उनका ज्यादातर संग-साथ भी ऐसे लोगों का रहा जो शूद्रों के जाति आधारिता चिंतन को घृणा मिश्रित शंका से देखते हैं और भी अनेक ऐसे छोटे-बड़े मसले रहे होंगे जिन पर 'अलग मत' रखने की यातना, 'अपनों' से अलगाव की अकथनीय पीड़ा वह निरंतर भोगते रहे होंगे ।

गरीबी की दहलीज पर खड़े निम्न-मध्यमवर्गीय परिवार से आने वाले राणा

बनर्जी पर अराजक जीवन जीने का आरोप है । हां, उनके पास दो आसान-से दिखने वाले अंर्तगुफित विकल्प जरूर थे । पहला, वह अपनी स्वतंत्र चेतना की तिलांजलि दे दें और दूसरा यह कि ब्राह्मण वर्चस्व वाले इस देश में अपनी जाति के कारण मिल सकने वाले लाभों को स्वीकार लें, लेकिन राणा जैसों के लिए ऐसे विकल्प क्या सचमुच आसान होते हैं ?

जनता के लिए काम करने का दंभ भरने वाले 'सफलों' को राणा जैसे प्रतिभाशालियों की स्वअर्जित 'असफलताएं' निरंतर मुंह चिढ़ाती रहती है । जब वे अपनी महत्वाकांक्षाओं की सीढ़ी दूसरों की गर्दन पर टिकाते हैं तो राणाओं की अराजकता के किस्से उन्हें राहत देते होंगे । अन्यथा 'सफलों' की ही शराबनोशी और काहिली के कैसे-कैसे किस्से मौजूद नहीं......

राणा बनर्जी को दूसरी बार मैंने क्रांति का आह्वान करने वाला गीत गाते सुना । गीत में डूबी एक सुरीली आवाज । तीसरी मुलाकात फोन पर हुई । वह 'जन विकल्प' में छपे मेरे एक लेख पर प्रतिक्रिया दे रहे थे । उस लेख में उन्हें बिहार के कुछ कवियों की प्रतिक्रियावादी कविताओं का पुनर्पाठ एक जरूरी दायित्व का निर्वहन लगा था । उनकी प्रतिक्रिया में खासी आलोचनात्मक क्षमता निहित थी । चौथी और अंतिम बार मैंने उन्हें एक नुक्कड़ नाटक की तैयारी में जुटे देखा ।

आज पलट कर देखता हूँ तो पाता हूँ कि अपरिचय की इन चार मुलाकातों में ही मैंने उनकी बहुमुखी प्रतिभा के कई पहलुओं का तो साक्षात्कार कर ही लिया था। - एक जेनुइन जनवादी, प्रतिबद्ध सामाजिक कार्यकर्त्ता, अच्छा गायक, एक साहित्यिक, रंगकर्मी और एक भावप्रवण मनुष्य । इधर कुछ जगहों पर उनकी कुछ कविताएं भी छपी हैं....अग्रज मित्र प्रेमकुमार मणि की कहानी 'खोज' का पात्र कहता है, 'जानते हो भाई, जब लोक और कवि आत्महत्या करने लगें तब उसका अर्थ क्या होता है ? देश पर, समाज पर गहरा संकट आनेवाला है । खतरनाक भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं.....क्या आदमी जानबूझकर आत्महत्या करना चाहता है ? परिस्थितियां उसे मजबूर कर देती हैं । आत्महत्या की नहीं जाती, हो जाती है । आप आत्महत्या के विरूद्ध हो, मैं सोलह आने आपके साथ हूँ, लेकिन मैं उन परिस्थितियों को बदलना चाहता हूँ जिनके कारण आदमी जीना नहीं चाहता । आप आत्महत्या करने वालों के प्रति घृणा पैदा करना चाहते हैं । वे कायर हैं - कुत्सित हैं, कहते हो, मैं उन्हें कायर नहीं कह सकता । क्या आप बतला सकते हैं कि किसी बेईमान आदमी ने कभी आत्महत्या की है ?'

कॉमरेड राणा बनर्जी को याद करते हुए क्या इन असुविधाजनक प्रसंगों को भावावेश कहकर टाला जा सकता है ?

(असम विश्वविद्यालय के रवींद्रनाथ टैगोर स्कूल ऑफ लैंग्वेज एंड कल्चरल स्टडीज में असिस्टेंट प्रोफेसर)

●